मानवीय शिक्षा (जीवन विद्या) कार्य योजना

मानवीय शिक्षा के धारक-वाहक :- शिक्षक

) शिक्षक के लिये स्रोत :- (क) जीवन विद्या के तात्विक तथा आस्तित्विक स्वरूप (अस्तित्व, अस्तित्व में परमाणु का विकास) की अवधारणा और अध्ययन.

(ख) जीवन के विकास में व्यवहार का आशय तथा महत्व और उसके नित्य वर्तमान स्वरूप - प्रमाण तथा प्रामाणिकता की अवधारणा और अध्ययन (मानव व्यवहार दर्शन, मानव कर्म दर्शन एवं मानव अभ्यास दर्शन).

(ग) ~~अस्तित्व~~ अस्तित्व में जीवन के परम प्रयोजन (जीवन जागृति) की अवधारणा एवं अध्ययन (मानव अनुभव दर्शन).

) मानवीय शिक्षा (जीवन विद्या) का स्रोत :- सहअस्तित्ववाद = मध्यस्थ दर्शन = मानव कर्म दर्शन, मानव व्यवहार दर्शन, मानव अभ्यास दर्शन, एवं मानव अनुभव दर्शन.

5) मानवीय शिक्षा के लक्ष्य :- (क) प्रत्येक मनुष्य सत्य में अनुभूत हो.

(ख) प्रत्येक मनुष्य व्यवहार में सामाजिक तथा व्यवसाय में स्वावलम्बी हो.

(ग) प्रत्येक मनुष्य को सुखी जीवन (समाधान, समृद्धि, अभय एवं सहअस्तित्व) की उपलब्धि हो.

) मानवीय शिक्षा का प्रयोजन :- सामाजिक व्यवस्था में स्वतन्त्रता पूर्वक स्वराज्य की सर्वसुलभता अर्थात् जीवन के विकास में प्रेरक सामाजिकता की स्थापना.

) विद्यार्थी को प्राप्त वातावरण :- (क) स्कूल + शिक्षक + सहपाठीगण

(ख) घर + परिवार (अभिभावक एवं बन्धुवर) + मित्रगण

(ग) देश + समाज + समुदाय.

) विद्यार्थी के लिये शिक्षा का स्रोत :- शिक्षक. शिक्षक ~~स्वयं~~ स्वयं आचरण पूर्वक मानवीय शिक्षा (जीवन विद्या) को प्रामाणिक स्वरूप में प्रस्तुत करके ही विद्यार्थियों को शिक्षित करेगा, क्योंकि शिक्षक ही वह प्रामाणिक जीवन्त स्रोत है जिसका आज्ञापालन एवं अनुकरण विद्यार्थी के लिये सहज एवं सुलभ है।

शिक्षा (जीवन विद्या) के विषय वस्तु का स्वरूप :-

अनुभव स्वरूप → स्वतन्त्रता
बोध स्वरूप → स्वानुशासन
चित्रण स्वरूप → व्यावहारिकता
विचार स्वरूप → समर्पण
आशा स्वरूप → आज्ञापालन

} प्राप्ति → स्वराज्य →

(क) आर्थिक सुरक्षा अर्थात् समृद्धि
↓
उत्पादन सुलभता + विनिमय सुलभता
↓
आदान-प्रदान (अर्पण-समर्पण)
↓
सहयोग

(ख)
सामाजिक सुरक्षा अर्थात न्याय सुलभता (अभय)
↓
विश्वास → अनुसरण

) मानवीय शिक्षा की शिक्षण पद्धति, प्रणाली एवं नीति :-

(क) पद्धति :- प्रामाणिकता पूर्वक
(ख) प्रणाली :- समाधान पूर्ण
(ग) नीति :- न्यायपूर्ण (तन, मन एवं धन रूपी अर्थ की सुरक्षा तथा सदुपयोग, मानवीय संबंधों में निहित मूल्यों की पहचान एवं निर्वाह).

) मानवीय शिक्षा के शिक्षण के क्रियान्वयन का स्वरूप :-

(क) बालक / विद्यार्थी में पायी जाने वाली प्रवृत्तियों (चयन एवं आस्वादन) में आशापूर्वक आज्ञापालन, अनुसरण तथा सहयोगवादी आचरण की स्थापना.
(ख) भय तथा प्रलोभन से मुक्त, एवं स्नेह, विश्वास तथा सुरक्षा से पूर्ण स्थिति (वातावरण) को निर्मित करना.
(ग) क्षमता एवं पात्रता → मूल्यांकन
(घ) शिक्षक एवं विद्यार्थी में परस्परता में स्नेह एवं विश्वास.
(ङ) सार्वभौम आदर्श (व्यवस्था + व्यवस्था में भागीदारी) की अवधारणा
(च) सुधार प्रक्रिया :- त्रुटियों के कारणों की समझ एवं निराकरण;
(i) अज्ञानता का निराकरण प्रबोधन पूर्वक,
(ii) एकाग्रता का अभाव (चंचलता) का निराकरण अभ्यास पूर्वक.

१) मानवीय शिक्षा की उपलब्धि :- (क) विद्यार्थियों में वृत्ति (विचार) की ओर उन्मुखता का विश्लेषणों के आधार पर मूल्यांकन.
(ख) मानवीय संबंधों में निहित मूल्यों की पहचान एवं उनके निर्वाह हेतु क्षमता एवं पात्रता के अनुरूप योग्यता का प्रकाशन एवं उनमें विकास.
(ग) आज्ञापालन पूर्वक अनुसरण एवं सहयोग के आधार पर विद्यार्थी में विश्वास का मूल्यांकन.
(घ) मानवीय जीवन के विकास में सहायक समाज का निर्माण

" दिव्य पथ संस्थान "
अमरकंटक

" इति शुभ "

ए. नागराज शर्मा
श्री भजनाश्रम, श्री नर्मदांचल
अमरकंटक, शहडोल.